IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

सती प्रथा उन्मूलन एवं 19वीं सदी का सामाजिक सुधार

डॉ रजत गंगवार

असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उ०प्र०

rajatgangwar4289@gmail.com

शोध सार -

19वीं शताब्दी में भारत में हुए सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन औपनिवेशिक काल में राष्ट्रीय जागरण के प्रारम्भिक बिन्दु थे। इसे भारतीय नवजागरण का काल भी कहा जाता है। इन आंदोलनों ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'बिपिन चन्द्रा' ने इन आंदोलनों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण का ही एक हिस्सा था, जो भारत में एक सामान्य सुधार आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ। राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, एनी बेसेंट तथा ज्योतिबा फूले आदि ये सभी समाज सुधारक सही अर्थों में देशभक्त थे। इन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ जंग छेड़ी और भारतीयों को अपने प्राचीन गौरवशाली अतीत से परिचित कराकर भारतीयों को उस पर गर्व करने की प्रेरणा दी।

19वीं शताब्दी को भारतीय समाज के लिए एक क्रांतिकारी समय कहा जा सकता है। यह भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में बुनियादी बदलाव का साक्षी था। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में वर्षों पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं को चुनौती दी गई। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा तथा कन्या शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आंदोलन चलाए गए तथा स्त्री शिक्षा और विधवा पुर्नविवाह को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जागरूकता अभियान चलाए गए। इन आंदोलनों में भारत के शिक्षित, अंग्रेजी पढ़े लिखे वर्ग ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। वास्तव में भारतीय समाज में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धजीवीयों में यह चेतना

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

फैली कि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में मौजूद कुरीतियों को दूर किए बिना भारतीय तथाकथित अंग्रेजी श्रेष्ठता और अहंकार के प्रभाव से खुद को मुक्त नहीं कर सकते।

कुंजी शब्द:-
सामाजिक स्थिति, धर्म सुधार आंदोलन,सती प्रथा,आडंबर,सामाजिक कुरीतियां, अतीत, स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, अंधविश्वास, पाखंड, प्रगतिशील, मूर्ति पूजा, धार्मिक सहिष्णुता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किकता